B.A. Hindi I st Paper

B.A - I Paper - I

प्राकृत भाषा की उत्पति एवं विकास पर प्रकाश डालें।

प्राचीन भारत की विशाल ज्ञाननिधि संस्कृत, प्राकृत और पालि इन तीनों भाषाओं में सुरक्षित है। अतः भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं ज्ञान विज्ञान को अवगत करने हेतु प्राकृत भाषा का ज्ञान अपेक्षित है। भारतीय वांगमय में प्राकृत वांगमय का महत्वपूर्ण स्थान है किन्तु इसके बाद अध्ययन के अभाव में प्रत्येक जिज्ञासु के ज्ञान की चमक धुँधली ही रहेगी। इसमें केवल कल्पना, बौद्धिक विकास एवं मतमतान्तरों की समीक्षा ही नहीं है अपितु ज्ञान सागर के मन्थन से समुद्भूत जीवन स्पर्शी अमृत रस भी है। हिन्दी भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए संस्कृत भाषा के अध्ययन से कहीं अधिक प्राकृत भाषा का अध्ययन आवश्यक है। हिन्दी के प्रत्यय एवं रूपों का जितना निकट का सम्बन्ध प्राकृत भाषा के साथ है उतना अन्य किसी भाषा के साथ नहीं। यह सत्य है कि शब्द कोष के लिए हिन्दी संस्कृत की ऋणी है तो रुप गठन के लिए प्राकृत की।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति → प्राकृत भाषा का बोध कराने वाला प्राकृत शब्द प्रकृति से बना है। प्रकृति शब्द के अर्थ के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ मनीषी इस शब्द का अर्थ एक मूल तत्त्व या आधार भूत भाषा मानते हैं। और उनका मत है कि प्राकृत की आधार भूत भाषा संस्कृत है। तथा इसी संस्कृत से प्राकृत भाषा निकली है। हेमचन्द्र, मार्कण्डेय, धनिक आदि प्राचीन वैयाकरणों और अलंकारिकों ने प्राकृत की प्रकृति संस्कृत को माना है। हेमचन्द्र ने कहा है "प्रकृतिः संस्कृतम् तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्" अर्थात प्रकृति संस्कृत है इस संस्कृत से आयी हुई भाषा प्राकृत है। मार्कण्डेय ने भी इसी अर्थ का समर्थन किया है। धनिक ने प्राकृत शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है कि "प्रकृतेः आगतः - प्राकृतम्"। प्रकृतिः संस्कृतम्।

लेकिन उपर्युक्त कथन की जब हम व्याख्या करते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि प्राकृत भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है किन्तु "प्रकृतिः संस्कृतम्" का अर्थ है कि प्राकृत भाषा को सीखने के लिए संस्कृत शब्दों को मूलभूत रखकर उसके साथ उच्चारण भेद के कारण प्राकृत शब्दों का जो

साम्य-वैषम्य है उसकी दिखाना अर्थात् संस्कृत भाषा के द्वारा प्राकृत भाषा को सीखनेका यत्न करना है। संस्कृत और प्राकृत के बीच किसी प्रकार का कार्य कारण या जन्य जनक भाव है ही नहीं ये दोनों भाषा सहोदरा हैं दोनों का विकास किसी अन्य श्रोत से होता है।

इस प्रकार अनेक युक्ति और प्रमाणों के आधार पर यह कहना कि प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है गलत होगा।

प्राकृत भाषा का विकास → प्राकृत शब्द हमारे प्राचीन वैयाकरणों और साहित्य समालोचकों द्वारा अनेक भाषाओं और बोलियों के लिए प्रयुक्त किया जाता रहा है इसके प्राकृत भाषा की गणना मध्य भारतीय आर्य भाषा (600 ई-पू० 1000) में की जाती है। इसका विकास वैदिक संस्कृत या छान्दस से माना जाता है। अतः प्राकृत की प्रकृति वैदिक भाषा से मिलती जुलती है। प्राकृत में व्यंजनान्त शब्दों का प्रयोग प्रायः नहीं होता। संस्कृत में व्यंजनान्त शब्द रुप का अन्तिम व्यंजन लुप्त हो जाता है। लौकिक संस्कृत भाषा भी छान्दस से विकसित है अतः विकास की दृष्टि से प्राकृत और संस्कृत दोनों सहोदरा है कुछ विद्वान ऋग्वेद की भाषा को साहित्यिक एवं रुढिग्रस्त मानते हैं और उनका मत है कि यह भाषा भी उस समय की प्राकृत भाषा से विकसित हुआ और प्राकृतों से संस्कृत का विकास भी हुआ और प्राकृतों से इनके अपने साहित्यिक रुप भी विकसित हुए।

प्राचीन भारत की मूल भाषा का रुप क्या था यह तो स्पष्ट नहीं है पर आर्यों की अपनी एक भाषा थी और उस भाषा पर अन्य जातियों का प्रभाव भी पड़ा और छान्दस भाषा विकसित हुई। इसके भी पद, वाक्य, ध्वनि और अर्थ इन चारों अंगों को विशेष अनुशासनों में आबद्ध कर दिया, सो भी जन साधारण की बोली का प्रवाह तीव्र गति से आगे बढ़ता ही गया। फलस्वरुप ऋग्वेद की अपेक्षा अथर्ववेद और ब्राह्मण साहित्य में जन तत्व अधिक समाविष्ट हो गये। अतः सिद्ध है कि प्राकृत भाषा और साहित्य ने मध्य काल में संस्कृत को पर्याप्त प्रभावित किया।